

ग्रामाभ्युदयादेव देशाभ्युदयः  
गोविन्द बल्लभ पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय  
कृषि मौसम विज्ञान विभाग, कृषि महाविद्यालय  
पन्तनगर-263145 उधम सिंह नगर (उत्तराखण्ड)  
फोन नम्बर: 05944-233032



ग्रामीण कृषि मौसम सेवा बुलेटिन, जनपद – नैनीताल

मि एग्लिफुन्स क्ल ¼-फ'क एक्क e foक्कु ½ ह्क्जि एक्क e foक्कु foह्क्क] iक्क

फुन्स क्ल] एक्क e द्दह्क्क न्गिक्कु

0"क्क 27 वद%95 च्क्क वु वof/क्क 1 फ्नल एक्क & 5 फ्नल एक्क] 2018 फनु' 'क्क फनुक्क 30 uoएक्क] 2018

एक्क e iक्कक्कु%

भारत सरकार के i Foh foक्कु ea=ky; द्वारा वित्त पोषित एवं ह्क्जि एक्क e foक्कु foह्क्क द्वारा संचालित ग्रामीण कृषि मौसम सेवा परियोजना के अन्तर्गत j'क्क, एक्क e iक्कक्कु द्दह्क्क ह्क्जि एक्क e foक्कु foह्क्क] एक्क e Hou] ubZfnYyh द्वारा पूर्वानुमानित तथा एक्क e द्दह्क्क न्गिक्कु द्वारा संसोधित पूर्वानुमानित मध्यम अवधि मौसम आँकड़ों के आधार पर कृषि मौसम विज्ञान विभाग में स्थित कृषि मौसम विज्ञान प्रक्षेत्र इकाई (AMFU), गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर द्वारा u'क्क ft ys ea vxys iक्क फनुक्क में निम्न मौसम रहने की संभावना व्यक्त की जाती है :-

iक्कक्कु एक्क e र0	एक्क e iक्कक्कु & u'क्क				
	01/12/2018	02/12/2018	03/12/2018	04/12/2018	05/12/2018
वर्षा (मिमी0)	0	0	0	0	0
अधिकतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	17	17	17	16	16
न्यूनतम तापमान (डिग्री से.ग्रे.)	5	5	4	4	4
बादल आच्छादन	आंशिक बादल	आंशिक बादल	साफ	आंशिक बादल	आंशिक बादल
अधिकतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	85	85	80	80	80
न्यूनतम सापेक्षित आर्द्रता (प्रतिशत)	45	40	40	40	40
वायु की औसत गति (कि0मी0 प्रतिघंटा)	006	006	004	004	004
वायु की दिशा	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम	उत्तर-पश्चिम

भारत मौसम विज्ञान विभाग के नैनीताल स्थित मौसम विज्ञान वेधशाला (समुद्रतल से ऊँचाई-2084 मीटर) के प्रेक्षणानुसार विगत सात दिनों ( 23 – 29 नवम्बर, 2018 सुबह 8:30 तक) में आसमान में आंशिक बादल छाये रहे तथा अधिकतम तापमान 16.0 से 17.8 डि0से0 एवं न्यूनतम तापमान 5.4 से 7.2 डि0से0 के बीच रहा। ऐसे अनुमानित मौसम में गो0 ब0 पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय, पन्तनगर के वैज्ञानिकों द्वारा इस क्षेत्र के कृषक भाइयों को सलाह दी जाती है कि इस मौसम में विभिन्न फसलों के लिए खेतों में निम्नानुसार कार्यक्रम अपनायें।

Ñf'k एक्क e iक्क'क्क

Ql y च्क्क/क्क

- ❖ गेहूँ की दर से बोने वाली प्रजातियों की बुवाई करें। फसलों की बुवाई से पूर्व बीज उपचार अवश्य करें।
- ❖ गेहूँ के बीज का टाइकोडर्मा 5 ग्राम + सूडोमोनास 5 ग्राम/1 ग्राम बीज की दर से उपचारित करें।
- ❖ दलहनी फसलों हेतु थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजीन 1 ग्राम/किग्रा बीज तथा तिलहनी फसलों में मैटालेक्जिल 6 ग्राम/किग्रा बीज की दर से उपचारित करें।

- ❖ गेहूँ एवं जौ की बुवाई के तुरंत बाद या 3 दिन के अंदर उचित नमी की अवस्था में पेन्डीमेथिलीन 30 ईसी की 2.5 से 3.3 लीटर मात्रा को 750 लीटर पानी में घोल बनाकर अथवा बुवाई के 30–35 दिन बाद वैस्टा शाखनाशी की 400 ग्राम दवा को 500 लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। जिससे एक वर्षीय घासकुल एवं कुछ चौड़ी पत्ति वाले खरपतवारों का नियंत्रण किया जा सके।
- ❖ किसान भाई अपने क्षेत्रों के लिए अनुमोदित प्रजातियों की ही बुवाई करें।
- ❖ जैविक खेती करने वाले किसान भाई सभी फसलों हेतु ट्राइकोडर्मा हरजियानम + सोडोमोनास के 5–5 ग्राम/कि०ग्रा० बीज के हिसाब से बीज उपचार करें। तथा पोषक तत्वों की पूर्ति वर्मीकम्पोस्ट या सड़ी हुई गोबर की खाद एवं जैव उर्वरक के द्वारा करें। भूमजनिता बीमारियों की रोक-थाम के लिए 250ग्राम ट्राइकोडर्मा + 250 ग्राम सोडोमोनास जैव अभिक्रता से प्रति क्विंटल की दर से वर्मीकम्पोस्ट एवं गोबर की खाद को उपचारित कर एक सप्ताह के लिए छाया में रखें तथा बुवाई से पूर्व खेत में अच्छी प्रकार से मिला दें।
- ❖ दलहनी फसलों में खरपतवार नियंत्रण हेतु अगर मजदूर उपलब्ध हों तो पहली निराई, बुवाई के 20–25 दिन बाद और दूसरी 35–40 दिन बाद करें।
- ❖ चनें में सिंचित दशा में फ्लूक्लोरोलिन 1.7 लीटर अथवा ट्राइफ्लूरोलिन शाखनाशी की 1.5 लीटर मात्रा को 800 लीटर पानी में घोल बनाकर बुवाई से पूर्व छिड़काव करने से खरपतवारों का नियंत्रण हो जाता है।

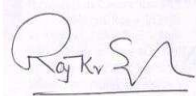
## m | kuçcUk%

- ❖ सिंचित घाटी क्षेत्रों में मेथी, पालक तथा हरे पत्ते एवं मसाले के लिए धनियां की फसल में सिंचाई कर समय-समय पर गुड़ाई करें।
- ❖ पर्वतीय क्षेत्रों में यदि पूर्व में पॉलीहाउस के भीतर सब्जी राई-पौध का प्रतिरोपण हुआ हो तो उपयुक्त नमी की अवस्था में यूरिया की टॉपड्रेसिंग कर गुड़ाई करें। यदि पत्ते कटाई हेतु तैयार हों तो बाजार में बिक्री करें।
- ❖ मध्यम पर्वतीय असिंचित क्षेत्रों में जहां ओला गिरने की संभावना कम रहती हो, में अर्किल मटर की बुवाई करें।
- ❖ घाटी क्षेत्रों में पूर्व में बोये गये आलू की फसल में पाले के बचाव हेतु समय-समय पर सिंचाई करते रहे।
- ❖ सिंचित घाटियों में यदि प्याज की पहाडी किस्मों की पौध तैयार हो गयी हो तो प्रतिरोपण करें।
- ❖ आलू के अगेती फसल में भूरे गोल धब्बे दिखाई देने पर मैन्कोजेब 2.5 ग्राम प्रति लिटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- ❖ मटर की बुवाई से पूर्व बीज को थीरम 2 ग्राम + कार्बन्डाजिम 1 ग्राम प्रति किग्रा बीज या ट्राइकोडर्मा 6 से 10 ग्राम प्रति किग्रा बीज की दर से उपचारित करने के बाद बुवाई करें।
- ❖ सेब तथा गुठलीदार फलों में तना विगलन रोग की रोकथाम के लिए प्रभावित सेब तथा गुठलीदार फलों के तनों के चारों तरफ मिट्टी हटाएँ जिससे धूप की किरणें ग्रसित भाग पर पड़े। प्रभावित छाओं को हटाकर इसमें चौबटिया पेस्ट लगाकर मिट्टी से ढक दें। इसके अलावा 0.3 प्रतिशत कॉपरऑक्सीक्लोराइड की प्रति पौधा में ड्रैचिंग करें।
- ❖ सेब की पत्तियों पर यूरिया 5 प्रतिशत का छिड़काव पत्ते झड़ने की अवस्था से एक सप्ताह पूर्व करें।
- ❖ ऊँचाई वाले क्षेत्रों में जंगली खुमानी, आड़ू, मेहल, जंगली नाशपाती, सेब आदि का बीज इकट्ठा करके सुखायें। तदपश्चात् उचित उपचार के पश्चात् बोने की प्रक्रिया शुरू करें।
- ❖ खाद उर्वरक तथा फफूदीनाशक/कीटनाशक दवाईयाँ जो गद्दों में भरते समय मिट्टी में मिलाई जाती है का प्रबन्ध उचित मात्रा में कर लें।
- ❖ पर्णपाती पौधों में लगाये जाने वाले पौधों की उत्तम किस्मों का आरक्षण अभी से कर ले अन्यथा बाद में अच्छे पौधें न मिलने पर परेशानी हो सकती है।
- ❖ थाले बनाने का कार्य प्रारम्भ करें तथा पेड़ के तनों पर चूना + नीला थोथा तथा अलसी के तेल क्रमशः 30 कि०ग्रा०, 500ग्रा० और 500 मि०ली० को 100 लीटर पानी में घोलकर जमीन से 2.3 फिट तक पुताई का कार्य करें।

## Ik kq kyui zUk%

- ❖ पशुओं को ठंड से बचाव हेतु सूखी घास, पुवाल जो जानवरों के खाने के उपयोग में नहीं आती को बिछावन के रूप में प्रयोग करें। खिड़की दरवाजों पर त्रिपाल लगा दें ताकि ठंडी हवा प्रवेश न करें।
- ❖ ठंड में पशुओं के आहार में तेल और गुड़ की मात्रा बढ़ा दें। अधिक ठंड की स्थिति में पशुओं को अजवाइन और गुड़ दें।

- ❖ पशुओं के बैठने का स्थान समतल होता चाहिए तथा इस समय नवजात पशुओं के रख-रखाव पर विशेष ध्यान दें।
- ❖ पहाड़ी क्षेत्रों में पशुशाला में गर्मी हेतु हीटर का उपयोग करें। तथा अंगेठी का उपयोग धुंआँ निकलने के बाद कर सकते हैं।
- ❖ मुर्गियों के आवास के तापमान का अनुरक्षण करें।
- ❖ पशुओं को धान की कन्नी आहार के रूप में दें। जिससे उन्हें उर्जा और गर्मी मिलती है।
- ❖ इस बदलते मौसम में नवजात पशुओं में निमोनिया की संभावना ज्यादा रहती है। इसलिए पशुओं की आवास व्यवस्था को सुदृढ़ करें व आहार में गर्म चीजें दें।
- ❖ वर्षा के बाद नाना प्रकार के अन्तः परजीवी आहार नलिका में उत्पन्न हो जाते हैं। जो पशुओं का आहार स्वयं ग्रहण कर लेते हैं। अतः सर्वप्रथम निकटतम पशुओं का कृमिनाशक औषधि दें।
- ❖ जिन पशुओं में एफ0एम0डी0 (मुखपका खुरपका) रोग के टीके नहीं लगे हैं उन पशुओं में तत्काल टीकाकरण करा लें। ताकि आपका पशुधन स्वस्थ रहे और उससे लगातार आपको सही उत्पादन प्राप्त होता रहे।
- ❖ खुरपका मुखपका के लक्षण—आँखें लाल होना, तेज बुखार होना (105–107°F), उत्पादन तथा आहार ग्रहण करने की क्षमता में कमी होना, मुँह में छाले होना, लार गिरना समय से उपचार न मिलने की दशा में पशु के खुरों में घाँव बनना जिसकी वजह से पशुओं का लंगड़ाकर चलना आदि लक्षणों के आधार पर मुखपका खुरपका रोग की पहचान की जा सकती है। रोग के लक्षण पता चलते ही रोगी पशुओं को अन्य स्वस्थ पशुओं से तत्काल अलग कर दें। निकटतम पशु चिकित्सक की सलाह अनुसार उपचार कराये तथा स्वस्थ पशुओं को चारा देने के उपरांत ही अंत में पीड़ित पशुओं को मुलायम हरा चारा दें। तदुपरांत हाथों को लाल दवा से अच्छी तरह साफ करें।



MO vkj0 d0 fl g

i k; ki d , oafi il iy ukMy vf/kdljh

xteh k df'k ek e l ok

xls c- iUr df'k , oai kls fo' ofo | ky; ] iUruxj